

# दौसा जिले के फसलीय प्रतिरूप में परिवर्तन

डॉ जगफूल मीना

व्याख्याता भूगोल विभाग, राजकीय स्ना. महाविद्यालय  
राजगढ़, अलवर, राजस्थान

## सारांश

अधिक उत्पादन व रोगों से सुरक्षा के लिये रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि के उपयोग से भूमि बंजर होने लगती है। इसलिए ऐसी कृषि की आवश्यकता हुयी जो प्राकृतिक संसाधनों को हानि पहुँचाये बिना निरन्तर की जा सकें। इसी के प्रबंधन को फसल प्रतिरूप कहते हैं। किसी भी क्षेत्र का फसल प्रतिरूप उस क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं से निर्धारित होता है।

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य दौसा जिले की विकास यात्रा को सही दिशा में अग्रसर होने के लिए कृषिगत फसलों के प्रतिरूप में परिवर्तन का विवेचन करना है।

## शब्दकोश

कृषि विकास, प्रतिरूप, भूमि उपयोग, रबी, खरीफ, जायद परिवर्तन ।

## प्रस्तावना

कृषि कार्य मानव जाति का एक प्राचीनतम उद्यम हैं। मानव जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्य करता हैं। परन्तु समय के साथ-साथ इसकी प्रविधियाँ में बदलाव होता रहा हैं। किसी क्षेत्र के फसलों के प्रतिरूप में परिवर्तन की सभावना के दो मत है। कुछ विद्वानों का मत है कि फसलों के प्रतिरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है जबकि कुछ विद्वान मानते हैं कि प्रविधिया के माध्यम से फसल प्रतिरूप को बदला जा सकता हैं। प्रसिद्ध विद्वान वसु केडी ने यह मत व्यक्त किया हैं "परंपराबद्ध तथा ज्ञान के अत्यंत निम्न स्तर वाले देश के कृषक प्रयोग करने की उद्यत नहीं होते हैं, वे प्रत्येक बात को विरक्ति और भाग्यवाद की भावना से स्वीकार करते हैं, उनके लिए कृषि, वाणिज्य, व्यापार की वस्तु न होकर जीवन की एक प्रणाली है। एक ऐसे कृषि प्रधान समाज में जिसके सदस्य परंपराबद्ध और अशिक्षित हैं, फसल में परिवर्तन की अधिक संभावना नहीं रहती है।"

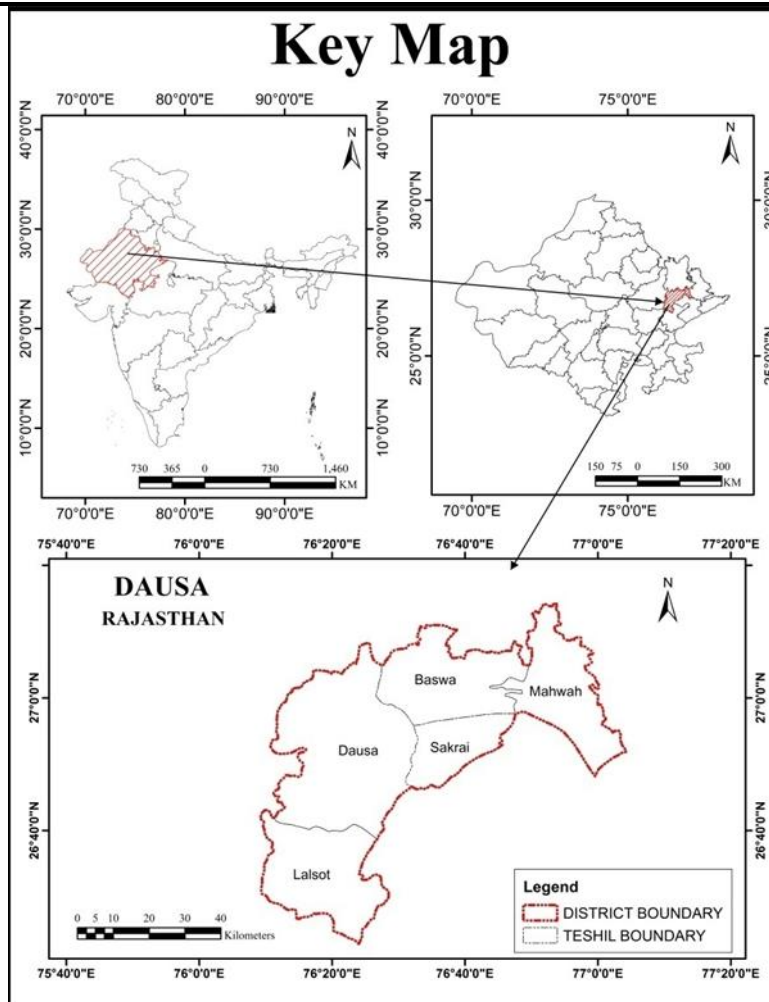
भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। भारत की 70 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या कृषि कार्यों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न हैं।

भारत उष्ण व सम शीतोष्ण दोनों कटिबंध में स्थित है। हमारे देश में फसलों के मुख्यतः खरीफ, रबी व जायद के नाम से जाना जाता हैं। खरीफ को फसलें दक्षिण पश्चिमी मानसून में बोई जाती है। खरीफ की फसलों के अन्तर्गत मुख्यतः चावल, कपास, जूट, ज्वार, बाजरा व अरहर आदि सम्मिलित है। रबी की फसलें अक्टूम्बर व नवम्बर माह में बोई जाती है तथा अप्रैल में काट ली जाती है। जायद की फसल ककड़ी, खरबूज, तरबूज, सब्जियाँ अप्रैल मई जून में तैयार की जाती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। अध्ययन क्षेत्र में 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि व पशुपालन क्रियाकलापों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न हैं।

इस प्रकार फसलीय प्रारूप में परिवर्तन अध्ययन क्षेत्र में भी हुआ है। इस कारण अध्ययन क्षेत्र का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध दौसा जिला पर आधारित हैं। दौसा जिला राजस्थान राज्य का धौलपुर के बाद क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे छोटा जिला हैं। यह जिला चारों तरफ से अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ हैं। जिले का अक्षा णीय विस्तार 26 डिग्री 22 मिनट से 27 डिग्री 50 मिनट तक तथा देशान्तरीय विस्तार 76 डिग्री 53 मिनट से 78 डिग्री 16 मिनट तक फैला हुआ हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 3432 वर्ग किलोमीटर है वर्ष 2001 की जनसंख्या के अनुसार दौसा जिले की कुल जनसंख्या 1317063 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 1634409 हो गई। जिले के उत्तर में अलवर, उत्तर-पूर्व में भरतपुर, पूर्व में करौली-सवाईमाधोपुर, दक्षिण में टोक एवं पश्चिम में जयपुर जिले से सीमा लगती है। जिले में 8 उपखण्ड तथा 5 तहसीलें हैं। गांवों की कुल संख्या 1109 है जिनमें 1079 गांव आबाद तथा 30 गांव गैर आबाद है तथा कुल कस्बों की संख्या 5 हैं।

फसलीय प्रतिरूप पर्यावरण परिवर्तन की स्थिति को निर्धारित करने में अहम भूमिका रखता हैं। इस अध्ययन में क्षेत्र के फसलीय प्रतिरूप का अध्ययन किया गया हैं।



## शोध का उद्देश्य

1. फसलों के क्षेत्रफल में हुये परिवर्तन का विश्लेषण करना।
2. जनसंख्या वृद्धि से फसल प्रारूप पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. फसल संयोजन का अध्ययन करना।

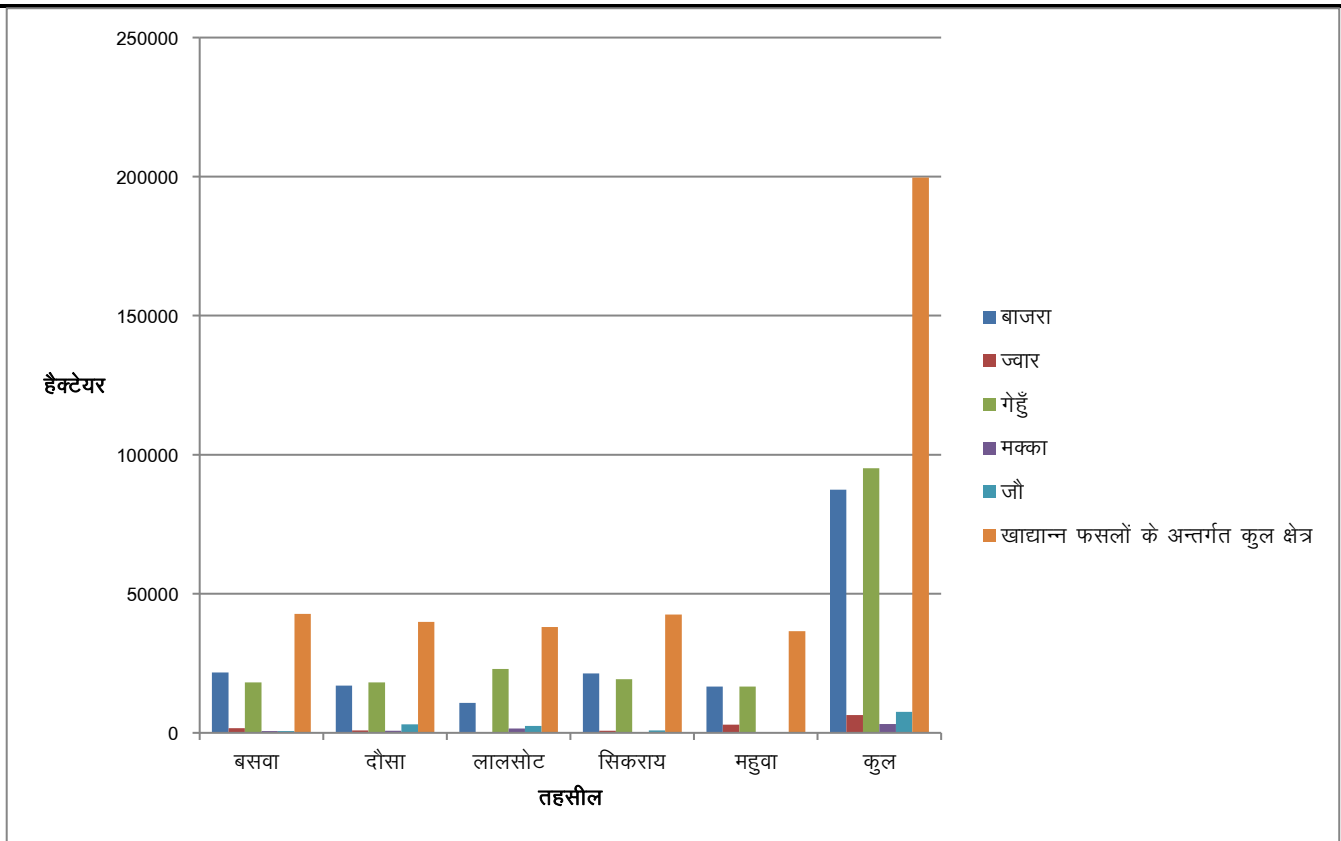
## शोध विधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित हैं। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का एकत्रीकरण व संकलन विभिन्न कार्यालय से प्राप्त दस्तावेजों, पुस्तकों प्रलेखों तथा अन्य प्रकाशनों से किया गया है।

## फसल प्रतिरूप में परिवर्तन

दौसा कृषि प्रधान जिला है। जिले की 75 प्रतिशत आबादी कृषि कार्यो में संलग्न है। यहाँ लोगों की जीविकापार्जन का मुख्य साधन कृषि व पशुपालन है। जिले के फसलीय प्रारूप को मुख्यतः रबी, खरीफ तथा जायद में विभाजित किया गया है। रबी की फसलों अक्टुम्बर-नवम्बर माह में बोया जाता है तथा मार्च-अप्रैल मे फसल पककर तैयार हो जाती है रबी की फसलों के अन्तर्गत मुख्यतः गेहूँ, जौ, सरसों, चना आदि फसलों को बोया जाता है। खरीफ की फसलों का समय मानसून जून-जुलाई से सितम्बर-अक्टुम्बर तक होता है। खरीफ की फसलों का उत्पादन मानसूनी वर्षा पर निर्भर रहता है। खरीफ की फसलों के अन्तर्गत प्रमुख फसलें बाजरा, मक्का, ज्वार तथा दालों का उत्पादन किया जाता है। खीरा ककडी, तरबूज, खरबूज आदि जायद की फसलें होती है। इनका प्रायः ग्रीष्मकाल में उत्पादन किया जाता है। दौसा जिला में बाणगंगा, मोरेल, गम्भीर दुंड नदियों का मैदानी भाग है। यह मैदानी भाग फसल उत्पादन के लिए एक उपजाऊ भूभाग है। यहाँ जलोढ-दोमट मिट्टी पायी जाती है। जो रबी व खरीफ की फसलों के लिए श्रेष्ठ मृदा है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या बहुत अधिक पायी जाती है। तथा जनसंख्या वृद्धि बहुत अधिक पायी जाती है। जनसंख्या वृद्धि की तुलना में कृषि योग्य भूमि बहुत कम है।

अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या द्वारा जीविकापार्जन के लिए फसलों का उत्पादन किया जाता है।



प्रमुख खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल  
2000-2001 (हैक्टेयर)

तहसील	खाद्यान्न फसलें					खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्र
	बाजरा	ज्वार	गेहूँ	मक्का	जौ	
बसवा	21668	1621	18097	655	675	42716
दौसा	17007	903	18100	734	3093	39837
लालसोट	10804	103	23019	1611	2513	38050
सिकराय	21327	796	19323	123	916	42485
महुवा	16619	2972	16661	5	330	36587
कुल	87425	6395	95200	3128	7527	199675

स्रोत:-कार्यालय जिला भू-अभिलेख दौसा

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि बाजरा का सर्वाधिक क्षेत्रफल बसवा 21668 हैक्टेयर है तथा लालसोट में बाजरे का क्षेत्रफल 10804 हैक्टेयर है। ज्वार का सर्वाधिक क्षेत्रफल में महुवा 2972 हैक्टेयर है तथा लालसोट में 103 हैक्टेयर हैं। गेहूँ का क्षेत्रफल लालसोट में 23019 हैक्टेयर तथा महुवा में 16661 हैक्टेयर हैं। मक्का का क्षेत्रफल लालसोट में 1611 हैक्टेयर तथा महुवा में 5 हैक्टेयर हैं। जौ का क्षेत्रफल दौसा में 3093 हैक्टेयर है तथा महुवा में 330 हैक्टेयर हैं। दौसा जिला में कुल खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 199675 हैक्टेयर है। खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल बसवा 42716 हैक्टेयर हैं।

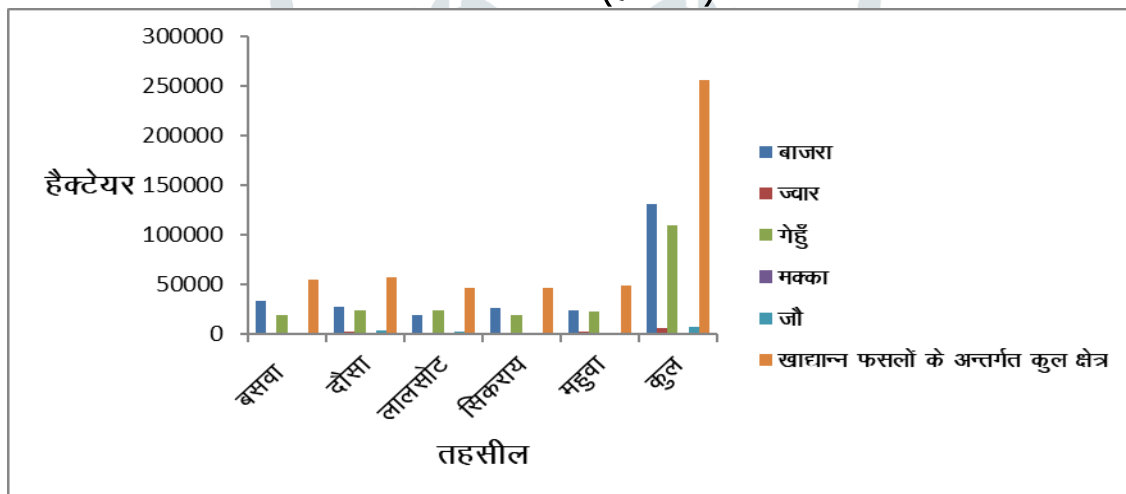
**प्रमुख खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल  
2015-2016 (हैक्टेयर)**

तहसील	खाद्यान्न फसलें					खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्र
	बाजरा	ज्वार	गेहूँ	मक्का	जौ	
बसवा	34027	852	19511	93	720	55203
दौसा	27857	2169	23636	235	3921	57818
लालसोट	19347	60	24604	122	2256	46389
सिकराय	26443	118	19517	26	657	46761
महुवा	23882	2587	22526	2	158	49155
<b>कुल</b>	<b>131556</b>	<b>5786</b>	<b>109794</b>	<b>478</b>	<b>7712</b>	<b>255326</b>

स्रोत:-कार्यालय जिला भू-अभिलेख दौसा

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 255326 हैक्टेयर है। दौसा तहसील में सर्वाधिक खाद्यान्न फसलों का क्षेत्रफल 57818 हैक्टेयर है।

**प्रमुख खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल  
2015-2016 (हैक्टेयर)**



तहसील	2000-2001		2015-2016		खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र में आया परिवर्तन (प्रतिशत)
	हैक्टेयर	प्रतिशत	हैक्टेयर	प्रतिशत	
बसवा	42716	21.39	55203	21.88	+29.23
दौसा	39837	19.95	57818	22.91	+45.13
लालसोट	38050	19.05	46389	17.19	+21.19
सिकराय	42485	21.27	46761	18.53	+10.06
महुवा	36587	18.32	49155	19.48	+34.35
<b>कुल</b>	<b>199675</b>	<b>100</b>	<b>255326</b>	<b>100</b>	<b>+27.87</b>

स्रोत:-कार्यालय जिला भू-अभिलेख दौसा

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सन् 2000-2001 की तुलना में 2015-2016 में 27.87 प्रतिशत खाद्य फसलों में वृद्धि हुयी। महुवा तहसील में सर्वाधिक वृद्धि 34.35 प्रतिशत हुयी। सिकराय में सबसे कम वृद्धि 10.06 प्रतिशत हुयी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि दौसा जिले में खाद्य फसलों के प्रतिरूप में परिवर्तन हुआ।

**दौसा जिले में फसलीय प्रतिरूप के अन्तर्गत क्षेत्रफल  
में आया परिवर्तन  
(2000–2001 से 2015–2016)**

तहसील	2000–2001			2015–2016			फसलीय प्रतिरूप में आया परिवर्तन (प्रति ात में)		
	दाल	तिलहन	खाद्यान्न	दाल	तिलहन	खाद्यान्न	दाल	तिलहन	खाद्यान्न
बसवा	3747	7188	42716	10251	12174	55203	+17.35	+69.36	+29.23
दौसा	4261	9925	39837	9836	19957	57818	+13.08	+101.07	+45.13
लालसोट	4632	25800	38050	1929	33589	46389	-58.35	+30.18	+21.91
सिकराय	1704	6952	42485	440	7963	46761	-74.57	+14.54	+10.06
महुवा	2873	13610	36587	733	1816	49155	-74.48	+33.43	+34.35
कुल	17217	63475	199675	23189	91844	255326	+34.68	+44.69	+27.8

स्रोत:—कार्यालय जिला भू-अभिलेख दौसा

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि दलहन के कुल क्षेत्रफल में 34.68 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। लालसोट तहसील में दलहन के क्षेत्रफल -58.35 मे प्रतिशत की कमी हुयी। तिलहन के कुल क्षेत्रफल 44.69 में प्रतिशत वृद्धि हुयी। बसवा तहसील में तिलहन के क्षेत्रफल 69.36 मे सर्वाधिक वृद्धि प्रतिशत वृद्धि हुयी। खाद्यान्न के कुल क्षेत्रफल में 27.87 प्रतिशत वृद्धि हुयी। महुवा तहसील मे खाद्यान्न के क्षेत्रफल 34.35 में प्रतिशत वृद्धि हुयी। अतः स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के फसलीय प्रतिरूप में परिवर्तन हुआ। जनसंख्या की मांगो की पूर्ति हेतु फसलीय प्रारूप में बदलाव हुआ।

### सुझाव एवं निष्कर्ष

- फसल के पैटर्न को देशी जरूरतों और बाजार के पैटर्न के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
  - फसल बीमा की योजना को व्यापक रूप से लागू करना चाहिए।
  - कृषि को प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में दी जानी चाहिए।
  - शिक्षा का व्यापक प्रसार करना।
  - जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित करना।
  - वैज्ञानिक विधि से खेती करना।
  - किसानों को जलवायु अनुकूल फसलों को अपनाने हेतु प्रेरित करना।
  - सौर पंप, ड्रिप सिंचाई और सिप्रंकलर जैसी उन्नत तकनीक को बढ़ावा देना।
- अध्ययन क्षेत्र में वैकल्पिक अनाज के उत्पादन को बढ़ावा देने से पोषण सुधार पानी की बचत और कृषि के लिए ऊर्जा की मांग में कमी तथा इससे होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी जैसे लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

### संदर्भ

- राजस्थान जनगणना रिपोर्ट 2011।
- दौसा सांख्यिकीय विभाग, दौसा।
- भार्मा, बी.एल. (1991) मृदा विज्ञान, वसुन्दरा प्रकाशन, गोरखपुर
- सक्सेना, हरिमोहन (2012), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- ओझा, एस. के, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण।
- सिंह, सविन्द्र (2010) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, मिश्रा, डॉ. जे.पी. (2010) "भारत का भूगोल" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
- कपूर, सुदर्शन (1974) "भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।